

किसानों की हुंकार से गूंजा भोपाल



दिलीप झा

हजारों किसानों ने हक और सम्मान की लड़ाई लेकर 28 जुलाई की रात और 29 को दिनभर राजधानी भोपाल में जबरदस्त हंगामा किया. इस दौरान किसानों ने उनके हक में ठोस फैसले करने के लिए सरकार को बाध्य कर दिया. दरअसल मोहन यादव से मिलने की तीन अलग-अलग तारीखें दी गई थीं, लेकिन इसके बावजूद किसी कारणवश मुख्यमंत्री तक उन्हें पहुंचने ही नहीं दिया गया. किसानों को जब यह अहसास हो गया कि सरकार उनकी बात सुनने को तैयार नहीं है तब उन्होंने अपनी ताकत से सरकार को परिचित कराया. सूत्र बताते हैं कि इसकी रूपरेखा हालांकि हरदा से तैयार हुई थीक्योंकि हरदा से नर्मदापुरम और फिर भोपाल तक किसानों की रैली आगे कैसे बढ़ी. दोनों जिले में किसानों को रोका नहीं गया. भोपाल में सरकारी बसों के उपर चढ़कर किसानों ने जबरदस्त हुड़दंग मचाया. पूरा शहर अस्त-व्यस्त हो गया. कई सड़कों पर भयंकर जाम की स्थिति बन गई. हालांकि भोपाल में पुलिस प्रशासन ने मोर्चा संभाला और मुख्यमंत्री निवास का घेराव करने जा रहे किसानों को रोका गया.

बताया जा रहा है कि इस रैली को प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से भारतीय जनता पार्टी और कांग्रेस दोनों दलों के नेताओं का समर्थन प्राप्त था. प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अध्यक्षता में केन्द्रीय कैबिनेट पीएम आशा की गाइडलाइन तय करती हैं . क्या पीएम आशा की गाइडलाइन को मानकर लगातार कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान को राज्य सरकार पत्र लिखकर केंद्रीय कैबिनेट द्वारा तैयार पीएम आशा के नियमों का अनदेखा कर मोहन यादव सरकार केंद्र सरकार का निरोध कर रही है ? राज्य के कृषि मंत्री अपने पत्र में लिख रहे हैं कि केंद्रीय मंत्री

शिवराज सिंह चौहान ने जो लक्ष्य दिया है उसको बढ़ाया जाए. सच्चाई यह है कि केंद्र कोई लक्ष्य निर्धारित नहीं करता है , कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान कोई लक्ष्य नहीं देते है बल्कि पीएम आशा के दिशा-निर्देशों के अनुरूप मूंग की 25% तक खरीद की स्वीकृति प्रदान कराये हैं. अपनी मांगों और अधिकारों को लेकर नर्मदापुरम से शुरू हुई 'किसान क्रांति पैदल यात्रा' मंगलवार को भोपाल पहुंची. हजारों अन्नदाताओं की मौजूदगी ने इस यात्रा को प्रदेश के किसान आंदोलन का बड़ा स्वरूप दे दिया. सबसे बड़ी बात इस आंदोलन की यह थी कि किसान सात दिनों का खाना-पानी लेकर यहां पहुंचे थे. हालांकि किसानों ने साफ संदेश दिया कि वे किसी टकराव के लिए नहीं, बल्कि अपनी मेहनत, फसल और भविष्य के सम्मान की लड़ाई लड़ने आए हैं. संयुक्त किसान मोर्चा के नेतृत्व में निकली इस यात्रा में शामिल किसानों ने मूंग की 100 प्रतिशत सरकारी खरीद, ई-टोकन विकास प्रणाली को निरस्त करने, खाद की सुचारु उपलब्धता और किसानों की समस्याओं के स्थायी समाधान की मांग उठाई. नर्मदापुरम से शुरू हुई यह यात्रा जैसे-जैसे आगे बढ़ी, वैसे-वैसे इसमें किसानों की संख्या और संगठनों का समर्थन बढ़ता गया. बताया जा रहा है कि इस आंदोलन में 19 संगठन शामिल थे। मंडीदीप स्थित कलियासोत नदी के पुल पर पुलिस बैरिकेडिंग तोड़ते हुए बड़ी संख्या में किसान राजधानी की ओर आगे बढ़े और मुख्यमंत्री आवास की ओर कूच किया.किसानों के प्रतिनिधिमंडल ने 28 जुलाई की शाम कृषि मंत्री एदल सिंह कंपनी से मुलाकात कर अपनी समस्याएं रखीं. प्रतिनिधिमंडल में शामिल किसानों को कृषि मंत्री ने मुख्यमंत्री से चर्चा कर जवाब देने की बात कही, लेकिन मुख्यमंत्री से मुलाकात का समय उस समय भी तय नहीं हो पाया. राष्ट्रीय मजदूर संघ के जिला अध्यक्ष राकेश गौर ने बताया कि किसानों का 12 सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल सरकार तक अपनी बात पहुंचाने के लिए गया था.

किसान को पूरा सम्मान चाहिए

आंदोलन में शामिल किसानों का कहना था कि उनकी लड़ाई सिर्फ समर्थन मूल्य या खरीदी तक सीमित नहीं है, बल्कि खेती को लाभकारी बनाने और किसान परिवारों के भविष्य को सुरक्षित करने की मांग है .किसानों का आरोप है कि मूंग की पूरी सरकारी खरीदी नहीं होने के कारण कई किसानों को मजबूरी

में अपनी उपज कम कीमत पर बेचनी पड़ती है ,वहीं, खाद वितरण व्यवस्था में आ रही परेशानियों को लेकर भी किसानों में नाराजगी है .किसानों का कहना है कि समय पर खाद उपलब्ध नहीं होने से खेती प्रभावित होती है और उत्पादन लागत लगातार बढ़ती जा रही है.

निशानेबाज

कुछ बातें सीधे करती हैं हिट राहुल ने किसे कहा इंडियट



अचकन या शेरवानी पर फक्की कसते हुए उसे शाहजहां के तबलची की पोशाक बताया था. जहां तक इंडियट शब्द की बात है, आपने वह गीत सुना होगा- अंगरेजी में कहते हैं कि आई लव यू ! इस गीत में परवीन बाॅबी अमिताभ बच्चन के लिए गाती है- हम तुमको समझा अक्कलवाला, तुम निकला पूरा इंडियट !'

पड़ोसी ने कहा, 'निशानेबाज, हर नेता के लिए जरूरी नहीं कि वह पढ़ा-लिखा, ज्ञानी या विद्वान हो. पार्टी के एक

नेता ने कुछ दिनों पूर्व कहा कि स्वामी विवेकानंद ने कहा था- तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूंगा. वास्तव में नेता को जानकारी नहीं थी कि यह कथन नेताजी सुभाषचंद्र बोस का था. पहले राजनीति में वकील, बैरिस्टर रहा करते थे, अब अधिकचरा लोगों की भरमार हो गई है जिनकी पढ़ाई-लिखाई संदेह के घेरे में है. ये लोग कुएं के मेंढक हैं जो कुएं को ही सारी दुनिया समझते हैं.'

हमने कहा, 'इंडियट का इतिहास पुराना है. एक राजकुमारी बहुत विदुषी थी जिसने शास्त्रार्थ में बड़े-बड़े विद्वानों को हरा दिया था. ये विद्वान पंडित राजकुमारी को सबक सिखाना चाहते थे. उन्होंने देखा कि एक युवक वृक्ष की उसी शाखा को काट रहा है जिस पर वह बैठा है. उसे इंडियट या महामूर्ख मानकर वह राजकुमारी के पास ले गए व कहा कि यह मौन रहकर सांकेतिक भाषा में शास्त्रार्थ करता है. पंडितों ने चालाकी से युवक को शास्त्रार्थ में जिता दिया. बाद में मूर्खता का भंडाफोड़ हुआ. आगे चलकर वही युवक महाकवि कालिदास के नाम से प्रसिद्ध हुआ.'

पीओके : भारत को रहना होगा सतर्क

कई लोगों के मारे जाने और बड़ी संख्या में घायल होने के दावे किए हैं. जाहिर है पाकिस्तान सेना से पीओके में जनता का असंतोष अब दबाए नहीं दब रहा है.

भारत सरकार ने इन घटनाओं और वहां कराए जा रहे तथाकथित विधानसभा चुनावों पर स्पष्ट और कड़ा रुख अपनाया है. विदेश मंत्रालय ने कहा है कि पाकिस्तान अधिकृत जम्मू-कश्मीर में आयोजित किए जा रहे थे तथाकथित चुनाव केवल एक दिखावटी प्रक्रिया है . भारत ने यह भी कहा कि पाकिस्तान अपने अवैध कब्जे और गंभीर मानवाधिकार उल्लंघनों को छिपाने का प्रयास कर रहा है तथा वहां के जन-प्रदर्शन आर्थिक शोषण और नागरिक अधिकारों के हनन का परिणाम है . भारत ने पाकिस्तान सरकार द्वारा प्रदर्शनकारियों पर बल प्रयोग और

दमनात्मक कार्रवाइयों पर भी गंभीर चिंता व्यक्त करते हुए कहा है कि वहां के लोगों के लोकतांत्रिक और मानवाधिकारों का सम्मान किया जाना चाहिए. यह प्रतिक्रिया भारत की उस स्थायी नीति के अनुरूप है, जिसके अनुसार पूरा जम्मू-कश्मीर, जिसमें पीओके भी शामिल है, भारत का अभिन्न अंग है.

इन घटनाओं का एक महत्वपूर्ण सुरक्षा पक्ष भी है. इतिहास बताता है कि पाकिस्तान में जब भी आंतरिक संकट गहराता है, तब कई बार नियंत्रण रेखा पर तनाव बढ़ाने या भारत विरोधी गतिविधियों को हवा देने की कोशिशें देखी गई हैं. ऐसे में भारतीय सुरक्षा एजेंसियों और सेना को किसी भी संभावित घुसपैठ, आतंकवादी गतिविधि या सीमा पर उकसावे की आशंका को परिणाम है . भारत ने पाकिस्तान सरकार, खुफिया तंत्र की सक्रियता और कूटनीतिक

स्तर पर निरंतर दबाव. तीनों की समान रूप से आवश्यकता है. पीओके में इंटरनेट सेवाओं पर प्रतिबंध, बड़ी संख्या में सुरक्षा बलों की तैनाती और आंदोलन से जुड़े कार्यकर्ताओं पर आतंक-रोधी कानूनों के तहत कार्रवाई की खबरें भी चिंता बढ़ाती हैं. किसी भी लोकतांत्रिक व्यवस्था में जनता की आवाज को बल प्रयोग से लंबे समय तक दबाया नहीं जा सकता. यदि वहां के लोगों की वास्तविक समस्याओं का समाधान नहीं किया गया, तो अस्थिरता और गहरा सकती है.

भारत को भावनाओं के बजाय दूरदर्शिता के साथ आगे बढ़ना होगा. एक ओर उसे अंतरराष्ट्रीय मंचों पर मानवाधिकारों के प्रश्न को मजबूती से उठाना चाहिए, वहीं दूसरी ओर अपनी सीमाओं की सुरक्षा और आंतरिक तैयारियों में कोई ढिलाई नहीं बरतनी चाहिए. पीओके की मौजूदा आशांति पाकिस्तान के लिए देतावनी है. लेकिन भारत के लिए भी यह याद दिलाने वाली स्थिति है कि राष्ट्रीय सुरक्षा के मोर्चे पर सतर्कता ही सबसे बड़ी शक्ति होती है.

क्या ढलान पर हैं क्षेत्रीय दल ?



श्याम यादव

भारतीय राजनीति का एक दौर ऐसा भी था जब दिल्ली की सत्ता का रास्ता राज्यों से होकर गुजरता था. केंद्र में सरकार बनाने के लिए राष्ट्रीय दलों को क्षेत्रीय दलों के समर्थन की आवश्यकता होती थी और कई बार कुछ सांसदों वाली पार्टियां भी राष्ट्रीय राजनीति की दिशा तय कर देती थीं. लेकिन पिछले एक दशक में राजनीतिक समीकरण तेजी से बदले हैं. राष्ट्रीय दलों, विशेषकर भाजपा के विस्तार और कांग्रेस के कमजोर होने के बीच यह सवाल महत्वपूर्ण हो गया है कि क्या भारतीय राजनीति में क्षेत्रीय दलों का प्रभाव घट रहा है या वे केवल बदलते दौर में अपनी भूमिका तलाश रहे हैं ?'

क्षेत्रीय दलों का उदय भारतीय लोकतंत्र की विविधता का परिणाम था. भारत की भाषाई, सांस्कृतिक और सामाजिक विविधताओं ने ऐसे राजनीतिक दलों को जन्म दिया, जिन्होंने राज्यों की आकांक्षाओं को आवाज दी. तमिलनाडु में द्रविड़ राजनीति, आंध्र प्रदेश में क्षेत्रीय अस्मिता, पंजाब की स्थानीय राजनीतिक पहचान, महाराष्ट्र की क्षेत्रीय राजनीति और उत्तर प्रदेश-बिहार में सामाजिक

भारतीय लोकतंत्र की शक्ति उसकी विविधता में है. राष्ट्रीय दल देश को व्यापक दृष्टि देते हैं, जबकि क्षेत्रीय दल स्थानीय आकांक्षाओं को स्वर देते हैं. दोनों की अपनी-अपनी भूमिका है. इसलिए आज यह कहना उचित नहीं होगा कि क्षेत्रीय दलों का दौर समाप्त हो गया है. सच यह है कि वे परिवर्तन के दौर से गुजर रहे हैं. जो दल समय के साथ स्वयं को बदल पाएंगे, वे भविष्य की राजनीति में भी प्रभावी रहेंगे और जो बदलाव को नहीं समझ पाएंगे, वे धीरे-धीरे हाशिए पर चले जाएंगे.

न्याय के आंदोलनों ने क्षेत्रीय दलों को मजबूत आधार दिया. इन दलों ने केवल राज्यों की राजनीति को प्रभावित नहीं किया, बल्कि कई बार केंद्र की सत्ता का संतुलन भी तय किया.

1989 से 2014 तक का दौर गठबंधन राजनीति के प्रभाव का समय था. इस अवधि में केंद्र की अधिकांश सरकारों को क्षेत्रीय दलों के सहयोग की आवश्यकता पड़ी. कभी उनके समर्थन से सरकारें बनीं तो कभी समर्थन वापस लेने से राजनीतिक संकट भी पैदा हुए. उस समय क्षेत्रीय दल राष्ट्रीय राजनीति के निर्णायक साझेदार हुआ करते थे. लेकिन 2014 के बाद तस्वीर बदलने लगी. भाजपा ने अनेक राज्यों में अपना संगठन मजबूत किया और उन क्षेत्रों में भी विस्तार किया, जहां लंबे समय से क्षेत्रीय दलों का प्रभाव था.

दूसरी ओर कांग्रेस के कमजोर होने से

राष्ट्रीय राजनीति में नया संतुलन बना. कई राज्यों में अब मुकाबला राष्ट्रीय दलों और क्षेत्रीय दलों के बीच दिखाई देने लगा है.

इस बदलाव का असर कुछ क्षेत्रीय दलों पर साफ दिखाई देता है. बिहार में जनता दल (यू) को बदलते राजनीतिक समीकरणों के बीच अपनी भूमिका तय करनी पड़ी है. महाराष्ट्र में शिवसेना विभाजन के बाद अपनी पुरानी राजनीतिक ताकत को बनाए रखने की चुनौती से गुजर रही है.

दिल्ली और पंजाब में प्रभाव स्थापित करने वाली आम आदमी पार्टी के सामने भी संगठन और विस्तार की चुनौतियां हैं. हालांकि पश्चिम बंगाल में तृणमूल कांग्रेस, तमिलनाडु में द्रविड़ दल और कई अन्य राज्यों में क्षेत्रीय दल आज भी मजबूत हैं. इसलिए यह मान लेना जल्दबाजी होगी कि क्षेत्रीय राजनीति समाप्त हो रही है.

कांग्रेस व लेफ्ट ने ठुकराई ममता की अपील

बंगाल की पूर्व मुख्यमंत्री ममता बनर्जी को सत्ता छो देने के बाद इस हकीकत का एहसास हुआ है कि विपक्ष की ताकत को कम नहीं आसना चाहिए. वामपंथी या लेफ्ट पार्टियों के 27 वर्षों तक चले वर्चस्व को ध्वस्त कर ममता बनर्जी ने बंगाल की सत्ता

बिल्कुल अकेली पड़ गई हैं . उनके अधिकांश सांसद भी साथ छोड़ चुके हैं . हाल ही में शहीद दिवस के मंच से ममता ने कांग्रेस, वामपंथी और अति वामपंथी ताकतों को एक मंच पर आने की अपील की . उन्होंने विपक्षी पार्टियों से बीजेपी के

खिलाफ संयुक्त मंच या जॉइंट प्लेटफॉर्म बनाने का संदेश दिया. इस लड़ाई में सारे विपक्ष को मतभेद भुलाकर एकजुट होने की उनकी अपील को कांग्रेस और वाम दलों ने ठुकरा दिया . इन पार्टियों ने ममता बनर्जी को याद दिलाया कि किस तरह उन्होंने सत्तारूढ़ रहने के दौरान कांग्रेस व लेफ्ट के साथ शत्रु की तरह बर्ताव किया था और अपना प्रमुख राजनीतिक प्रतिद्वंद्वी माना था. टीएमसी के कार्यकर्ताओं ने लेफ्ट के नेता-कार्यकर्ताओं पर हिंसक हमले किए थे. अपने भाषणों में भी ममता ने लेफ्ट व कांग्रेस की हमेशा तीखी आलोचना की थी. इन सारी बातों को ये दोनों चाहकर भी भुला नहीं सकते. ममता के विपक्षी एकजुटता के आवाहन को उनकी राजनीतिक विवशता माना जा रहा है .



कार्यकर्ताओं ने लेफ्ट के नेता-कार्यकर्ताओं पर हिंसक हमले किए थे. अपने भाषणों में भी ममता ने लेफ्ट व कांग्रेस की हमेशा तीखी आलोचना की थी. इन सारी बातों को ये दोनों चाहकर भी भुला नहीं सकते. ममता के विपक्षी एकजुटता के आवाहन को उनकी राजनीतिक विवशता माना जा रहा है .

संपादकीय बोर्ड

प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्दशी

शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

CROSS WORD 12336

डॉ. सागर खादीवाला

1	2	3	4	5	6
7			8		
		9	10		11 12
		13			14
15			16	17	
18			19		
		20		21 22	
23					24

बाएं से दाएं

1. मटर का एक भेद, बांस, यथार्थ (सं.) 4. टीसना, चिलक मारना, चमकना 7. नीचे के सात लोकों में से सबसे नीचे का लोक, नागलोक 8. आशंका, भय, खोचिम 9. उछलाना, फाटना 11. ईश्वर, परमेश्वर 13. चंचल, स्थिर न रहने वाला 15. कोई शब्द या बात बार-बार बोलने का काम 16. नागिन में भिनन का एक भेद जिसमें हर दश या उसका कोई घात होता है 18. उत्पन्न या पैदा की हुई, दासी, स्त्री 19. हिलोर, तरंग 21. तृतीय, तीसरा 23. एक प्रकार का मौख कंद 24. अंतर, फासला

ऊपर से नीचे

Solution 12335

श	क	टा	र	स	या	स
य	क्ष		क्ष	ति	या	मा
न	ग	ण	क			यो
	पा	णि		ड़		अ
झ	म	का		म	ज	मू
न	र		शो		राम	
झ		सो	र	ठा	न	री
ना	च	ना		ठ	सं	ड़

ज्योतिषाचार्य पंडित प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में सप्ता पक्ष से सुख मिलेगा. भाईयों का सहयोग व्यापार व्यवसाय में वृद्धि होगी. वर्ष के मध्य में राजनीति में अत्याधिक परिश्रम के कारण कष्ट होगा. मित्र के साथ व्यर्थ वाद विवाद के कारण मन व्यथित रहेगा. वर्ष के अन्त में शासन सत्ता से लाभ होगा. स्वजनों से सहयोग व अनुबंध होंगे.

मेघ और वृश्चिक राशि के व्यक्तियोंका नवीन योजनाओं में पूंजी निवेश होगा. वृष और तुला राशि के

व्यक्तियों को शासन से लाभ होगा. कर्क राशि के व्यक्तियों को सप्ता पक्ष से सुख मिलेगा. सिंह राशि के व्यक्तियोंको स्वजनों से सहयोग नवीन अनुबंध होंगे. मकर और कुंभ राशि के व्यक्तियों को अत्याधिक परिश्रम करना पड़ेगा. धनु और मीन राशि के व्यक्तियों को मित्र के साथ व्यर्थ वाद विवाद से मन व्यथित रहेगा. मिथुन और कन्या राशि के व्यक्तियों को परिश्रम की अधिकता रहेगी.

मेघ- सहयोगी आपके व्यवहार से लाभकारी हैं, लेकिन अध्ययन, धार्मिक कार्यों में मानसिक संतोष बना रहेगा, कार्यक्षेत्र में सफ़लता मिलेगी, ऊँसाह एवं लगन रहेगी. **वृषभ**- मनमोही रवैया नुक़सानदायगी हो सकती है, परिचितों से नुक़सान हो सकता है. शारीरिक अवस्थता एवं मानसिक पीड़ा हो सकती है. सुख साधनों में वृद्धि होगी. **मिथुन**- कार्यक्षेत्र में पृश्कर्तों का सामना करना पड़ेगा, सुविधा के अभाव से परेशानी होगी, पारिवारिक कलेश एवं विवाद से दूर रहें. अनावश्यक तनाव से बचें. **कर्क**- भौतिक सुख सुविधा पर बड़े खर्च की संभावना है, अपनी ताकत व पड़च का सहो लाभ लेने में नाकाम रहेंगे, न्यायालयीन प्रयासों में सफ़लता मिलेगी.

सिंह- विपरीत हालात में समझौता करना लाभकारी हैं, लेकिन अध्ययन, एवं नवीन कार्यों को योजनाओं पर विचार होगा. जवाबदारी के कार्यों में व्यस्तता रहेगी. **कन्या**- व्यर्थ की कार्यों में समय बीतेगा, पुराने विवाद के समाधान के आसार हैं, भूमि वाहनादिक कार्यों में सावधानी रखें, परीक्षा प्रतियोगिता के परिणाम उत्तम रहेंगे. **तुला**- लेन देन के मामले आपका पक्ष मजबूत होगा, कर्जदारी से छुटकारा मिल सकता है. इच्छानुसार सफ़लता प्राप्त होने का योग है. विवादोत्पद कार्य सफ़ल होंगे. **वृश्चिक**- जोखिम के कार्यों में रूचि बढ़ेगी, पारिवारिक मामलों में अपनी को मदद से लाभ होगा, मित्रों का सामाज्य सुख मिलेगा, अशुभ कार्यों के पूर्ण होने का योग है.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक चंचल, कोमल तथा आकर्षक व्यक्तित्ववान होगा, इनके कार्य एक से अधिक होते हैं, माता पिता को जीवन में सुखी रखेगा, यात्राप्रिय एवं लेखनादि में अधिक रूचि रखने वाला होगा.

उदयकालीन ग्रह चाल

8	के.7 सू. चं.सू.	6	सू.	5
9	10 श.		4	
11	12 सू.	1	ता.	मं. 3

पंचांग

रा.मि. 10 संवत् 2083 श्रावण कृष्ण तृतीया शनिवासरे रात 9/27, शतभिषा नक्षत्रे रात 8/20, शोभन योगे रात 11/48, वणिज करणे सू.उ. 5/24, सू.अ. 6/36, चन्द्रचार कुम्भ, शु.रा. 11, 1, 2, 5, 6, 8 अ.रा. 12, 3, 4, 7, 9, 10 शुभांक- 4, 6, 0.

व्यापार भविष्य

श्रावण कृष्ण तृतीया को शतभिषा नक्षत्र के प्रभाव से गुड, खांड, तिलहन, तेल, अलसी, सरसों में अच्छी मंदी होगी, रूई, चांदी के भाव में तेजी का योग है. आज 10 बजकर 30 मिनट से 15 मिनट के रूख पर व्यापार करना लाभप्रद रहेगा. भाग्यांक 1925 है.

SUDOKU 7468

7						4	
	5		3			7	
				8			2
				1	9		
2						8	
	6	7					
1		4					
9			2		5		
8							1

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ■ पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सं.दो.क 7467	8	4	5	6	1	3	7	2	9
	7	2	6	4	9	5	3	8	1
	9	3	1	7	8	2	6	5	4
	1	7	2	9	6	8	4	3	5
	5	6	9	3	2	4	1	7	8
	4	8	3	5	7	1	9	6	2
	2	9	7	1	5	6	8	4	3
	3	1	8	2	4	7	5	9	6
	6	5	4	8	3	9	2	1	7